# कृतज्ञता-ज्ञापन

कोई भी शोधकार्य मार्गदर्शन एवं सहयोग के बिना पूरा नहीं हो सकता । प्रस्तुत शोध-प्रबंध का शोधकार्य करते समय जिन गुरूवर्यों, विद्वानों, रिश्तेदारों तथा मित्रों का सहयोग मिला है, उन सभी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ । इन्हीं की बदौलत मैं अपना शोधकार्य सुचारू रूप से संपन्न कर सका ।

शोध प्रबंध का यह साकार रूप आदरणीय गुरूवर्या डॉ. अपर्णा पाटील जी की प्रेरणा एवं अनमोल मार्गदर्शन की उपलब्धि है । उनके प्रति केवल कृतज्ञता व्यक्त कर मुझे ऋणमुक्त नहीं होना चाहिए । इसलिए मैं आजीवन मॅडम का ऋणी रहूँगा । मेरे शोधकार्य को सहज सृजनशील बनाने में डॉ. अपर्णा जी का आत्मीय योगदान मुझे उनके प्रति विनम्र तथा श्रद्धेय बनाता है ।

शोधकार्य के लिए मुझे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय के 'हिंदी विभाग' के गुरूवर्य प्रोफेसर डॉ. माधव सोनटक्के (हिंदी विभाग अध्यक्ष), प्रोफेसर डॉ. संजय नवले, डॉ. हणमंतराव पाटील, डॉ. गणेशराज सोनाले, डॉ. सुधाकर शेंडगे, डॉ. भारती गोरे, डॉ. संजय राठोड, डॉ. भगवान गव्हाडे आदि गुरूजनों का मार्गदर्शन और प्रोत्साहन समय-समय पर मिला है । अत: मैं उन सभी के प्रति आभार प्रकट करता हूँ । इस समय मुझे गुरूवर्य प्रो. डॉ चंद्रदेव कवडे, प्रो. डॉ. नारायणजी शर्मा, प्रो. डॉ. अंबादास देशमुख और गुरूवर्या डॉ. पद्मा पाटील का स्मरण होता है । उन सभी के प्रति भी मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ ।

हिंदी विभाग के श्री. पवार, सौ. शिल्पा जिरे, भिंगारे मामा, बचके मामा और गायकवाड मामा के कार्यालयीन सहयोग के लिए मैं उनका अत्यंत आभारी हूँ ।

इस शोधकार्य के लिए मुझे मेरे परिवार वालों का स्नेह और सहयोग हमेशा प्राप्त हुआ । उन्होंने मुझे हमेशा प्रेरित और प्रोत्साहित किया । मेरे पिता नारायण तोंडे (तात्या) और माँ सावित्रीबाई तोंडे (अक्का) ने मुझे पढ़ाई के लिए हमेशा प्रेरणा दी है । मेरा

जीवन उनके आशीर्वाद का ही प्रतिफल है । उनके प्रति मैं हृदय से श्रद्धानत हूँ। मेरी जीवनसंगीनी सौ. सोनाली तोंडे का समय-समय पर मुझे सहयोग नहीं मिलता तो यह शोधकार्य कैसे संपन्न हो सकता था? अत: में हृदय की गहराई से उसका आभार प्रकट करता हूँ। मेरी लाडली बेटी नन्ही परी रेणुका को मैं कैसे भूल सकता हूँ । मेरे ससुरजी श्री. खुशालराव केदार, सासू माँ सौ. निर्मलाबाई केदार के प्रति मैं हृदय से श्रद्धानत हूँ । साथ ही मेरे बड़े भाई श्री. महादेव तोंडे (दादा) और भाभी सौ. अश्विनी, कु. वैभवी, चि. विशाल, श्री. भारत तोंडे (नाना), और सौ. संगिता वहिनी, कु. सुप्रिया, चि. स्वराज, प्रा. चिंतामण तोंडे (बापू) और सौ. मनिषा वहिनी, कु. गिरिजा, चि. गिरीश, श्री. कल्याण सांगळे, सौ. माधुरी सांगळे, कु. श्रावणी, चि. आयुष, श्री. अजित केदार, सौ. वर्षा केदार, चि. समर्थ, चि. श्रवण, चि. जय, साली साहिबा शालिनी आदि सभी मेरे अपनों का मैं हृदय से आभारी हूँ । डॉ. शालीग्राम तोंडे, सौ. डॉ. किर्ती तोंडे, चि. आदित्य. कु आनंदी, श्री. अजय, सौ. प्रिया, कु. श्रुती, चि. श्लोक, सौ. श्वेता पाटील और कु. मधुरिमा को मैं नहीं भूल सकता । मेरे परिवार का ही एक हिस्सा है । उनका भी हार्दिक आभार ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध को पुरा करने के लिए मुझे एच.पी.टी. ॲण्ड आर.वाय.के. कॉलेज नाशिक के हिंदी विभाग अध्यक्ष डॉ. मोहन लक्ष्मण चव्हाण सर काफी सहयोग और प्रोत्साहन प्राप्त हुआ है । मैं आपका बहुत आभारी हूँ । साथ ही मेरे सभी मित्रों का काफी सहयोग मिला है । डॉ. विजयप्रसाद अवस्थी, डॉ. राजेश करपे, प्रा. गंगाधर चाटे, प्रा. जयंत बोबडे, डॉ. रमेश शिंदे, प्रा. उमाकांत लादे, डॉ. सुनील कुलकर्णी, प्रा. ब्रम्हा साळवे, प्रा. संज्योति सानप, डॉ. मीरा निचले, कु. करिश्मा पठाण, रेक्टर जाधव सर, डॉ. क्षिरसागर, प्रा. विजय रानभरे, प्रा. रेवा कावले, कु. गुलनाझ शेख, प्रा. बाबासाहेब तोंडे, संपादक बालाजी तोंडे, प्रा. दत्ता तोंडे, प्रा. शिवदत्ता वावळकर, प्रा. शिवानंद मुंडे इन सभी दोस्तों का हृदय की गहराई आभार व्यक्त करता हूँ ।

शोध प्रबंध के टंकलेखन का कार्य डॉ. यजुवेन्द्र वनकर जी ने बहुत ही परीश्रम और लगन से बहुत अच्छी तरह से किया । इसलिए में उनका अत्यंत आभारी हूँ ।

अंत में उन सभी विद्वतजनों, लेखकों, सम्पादकों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ, जिनके कारण मैं यह शोध-प्रबंध प्रस्तुत कर सका हूँ ।

**रामदास नारायण तोंडे**